VISION IAS

www.visionias.in

SUBJECT:	Essay	**Test Code:**	1 7 5 3
Name of Candidate	ROSHAN		
Medium Hindi/Eng.	हिन्दी	**Registration Number**	0 0 4 1 4 4
Center	ON LINE	**Date**	

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

(1) "विध्वंस सृजन को जन्म देता है। यदि कुछ ध्वस्त होता है तो वह एक नई शुरुआत के लिए स्थान रिक्त करता है।"

"जीवन तेरा क्षुद्र अंश है,
व्यक्त नील घन माला में।
सौदामिनी-सी संधि सा
क्षणभर रहा उजाला में।"

जयशंकर प्रसाद अपनी रचना 'कामायनी' में क्षणभर के जीवन और उसकी समाप्ति के सृजन के साथ सम्बंधों को उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से रेखांकित कर रहे हैं।

विध्वंस का तात्पर्य भारतीय धर्मग्रंथों एवं दर्शनों में अलग-अलग

Don't write anything in the margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

माना जाता रहा है। चार्वाक दर्शन समाप्ति, अन्त, संहार के रूप में देखता है तो वहीं बौद्ध धर्म और वेदांत तथा वैदिक दर्शन समय को चक्रीय अवधारणा और रचनात्मकता के रूप में मूल्यांकित करते हैं।

रचनात्मकता विध्वंस को सृजन की पूर्वशर्त मानने वाले भगवान बुद्ध ने कहा भी है →
"हम केवल परम्परा में अपना नवाचार जोड़ते हैं और अगली पीढ़ी उसी परम्परा का आगे निर्वहन करती है।"

विध्वंस रचना करने, नये को जन्म देने के रूप में सामने आता है यह हम पृथ्वी के इतिहास, मानव सभ्यता

Don't write anything in this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

की परम्परा, सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य आयामों में भी देख सकते हैं।

सर्वप्रथम विध्वंस से सृजन का जन्म हम ब्रह्माण्ड के और पृथ्वी के निर्माण में पाते हैं। सुपरनोवा विस्फोट (Big Bang) से ब्रह्माण्ड का जन्म हुआ और इसी विध्वंस ने गुरुत्वीय ~~किरण~~ किरणों, न्यूट्रान तारों, ब्लैक पदार्थ को जन्म दिया। पृथ्वी सूर्य, मिल्की वे के सरीखे हजारों ग्रहों का जन्म इसी विध्वंस का परिणाम रहा।

पृथ्वी को देखे तो प्रारंभ में पृथ्वी अत्यधिक तापमान और वातावरण ~~रहित~~ रहित थी। किंतु पृथ्वी पर तूफानों, ज्वालामुखी विस्फोटों तथा भूकम्पों ने जल, ऑक्सीजन

वातावरण निर्माण में सहयोग दिया।

विध्वंस - सृजन की यह प्रक्रिया टैक्टोनिक प्लेटों के विस्तार तथा टैथिस भू-सन्निधि के विध्वंस और एंडीज, रॉकी तथा हिमालय पर्वत श्रृंखला के निर्माण के रूप में सामने आयी।

अब यदि भूगोल से अलग मानव इतिहास का मूल्यांकन करें तो वहां भी विध्वंस से सृजन दिखता है।

मानव सभ्यताओं में हड़प्पा-मोहनजोदाड़ो सभ्यता की समाप्ति उपरांत ग्रामीण संस्कृति का जन्म हुआ जिससे एक समृद्ध ज्ञान सम्पूर्ण भारतीय प्रायद्वीप तक विस्तारित हुआ। बेबीलोन-चीनी सभ्यताओं ने भी यूरोप, पूर्वीएशिया

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

की वर्तमान सभ्यता के निर्माण के लिए उर्वरक भूमि के रूप में आधार निर्मित किया।

मध्यकाल में जहां राजा-महाराजा सामंती संस्कृति का वर्चस्व रहा तो वहीं 17वीं सदी उपरांत ब्रिटिश शासन काल ने 'नवजागरण' की भूमि तैयार की इसी से 1947 उपरांत समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व के रूप में 'नये भारत' का निर्माण हुआ। जो आज भी अपने विकास की दिशा मे बढ़ रहा है।

स्वतंत्रता, लोकतंत्र, समानता बंधुत्व के राजनीतिक आदर्श फ्रांस तथा अमेरिकी विध्वंसकारी युद्धो के सृजन रहे। लोकतंत्र

के आदर्श की स्थापना हेतु हॉब्स लॉक, रूसो सरीखे हजारों विचारकों ने स्वयं को नष्ट किया है। आज भारतीय राजनीतिक लोकतंत्र ने आपातकाल के विध्वंसक अनुभवों से पपके वाद के संविधान संशोधनों द्वारा स्वयं को परिपक्व किया है।

इतना ही नहीं अब डिजिटल क्रांति के नये अनुभव ने भाई भतिजावाद लालफिताशाही, राजनीतिक भ्रष्टाचार, लूटतंत्र को समाप्त करने की दिशा में भी सृजनात्मक EVM वोटिंग मशीन पेपर ऑडिट ट्रायल की दिशा में बढ़ाहै।

सांस्कृतिक दृष्टि से देखे तो फैशन का स्वरूप लगातार परिवर्तित होता जा रहा है। पुराने विध्वंस ने नये सृजन को यहां भी जन्म

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

दिया है। फ्यूजन, मैकडोनाल्ड कल्चर, बर्गर संस्कृति, फ्यूजन संगीत जैज संगीत जैसे विध्वंसकारी-सृजनकारी संगमों ने एक नये किस्म की संस्कृति को जन्म दे दिया है। योगा का विश्व भर में व्यापक 'क्रेज' होना और 'हॉट योगा' 'आयुर्वेद' जैसे भारतीय सृजन बढ़ रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में देखे तो धर्मयुद्धों की लड़ाई ने इस्लाम और ईसाई दोनों धर्मों का विध्वंस कर धर्म को राज्य की परिधि से ही बाहर कर डाला। आज धर्मनिरपेक्षता उसी का सृजन है।

इसी प्रकार प्रथम विश्वयुद्ध उपरांत राष्ट्र संघ, अन्तर्राष्ट्रीय श्रमसंघ

का सृजन हुआ तो द्वितीय विश्व युद्ध ने वर्साय की एकपक्षीय संधि तथा राष्ट्र संघ की निष्क्रियता को सिद्ध किया। इसी का परिणाम संयुक्त राष्ट्र संघ, ब्रेटनवुड्स संस्थान, पेरिस जलवायु समझौता रियो समझौता के रूप में जाना है।

विध्वंस-सृजन का सम्बन्ध हम विज्ञान-प्रौद्योगिकी में भी देख सकते हैं। पृथ्वी केन्द्रीत संकल्पना का खण्डन आर्यभट्ट ने सूर्य केंद्रीत संकल्पना के रूप में किया जिसे गैलिलियो ने ब्रह्माण्डीय संकल्पना के रूप में सृजित किया। चार्वाक, चरक का चिकित्सा ज्ञान आज आयुष और मॉडर्न चिकित्सा के रूप में सृजित हुआ है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इसी प्रकार टेलीग्राफ, टेलीग्राम डाक से संदेश भेजना आज ध्वस्त हो गया है। इन्टरनेट मेल, एस. एम. एस. विडियो कॉल, मोबाइल व्हाट्सएप के रूप में नये सृजन सामने आ रहे है जो पुरानी तकनीक का अन्त करते जाते है। 2G, 3G, 4G, 5G जनरेशन इसी सृजन - विध्वंस की श्रृंखला को व्यक्त कर रही है।

विध्वंस-सृजन को हम नैतिक मूल्यों के संदर्भ में भी देख सकते है। जैसे मध्यकालीन भारत में सती प्रथा, पर्दा प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, नरबलि छूआछूत को उचित माना जाता था। किंतु विलियम बेंटिंग, कैनिंग तथा भारतीय संविधान (अंबेडकर की भूमिका) ने नये उदार तथा मानवीय नैतिक मूल्यों को जन्म दिया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आज सती प्रथा, तीन तलाक की समाप्ति, मंदिर-मस्जिद में महिलाओं का प्रवेश, तथा सम्पत्ति का अधिकार स्त्री सृजन को परिलक्षित कर रहा है।

विध्वंस और सृजन व्यक्तिगत जीवन में भी दिखाई देते हैं। मनुष्य अपने अनुभव, मान्यताओं, विश्वासों को समय के साथ समाप्त करता रहता है और नये अनुभव, विश्वास और आदतों को अपनाता रहता है। बचपन से मृत्यु तक विध्वंस-सृजन-विध्वंस की परम्परा चलती रहती है।

मृत्यु उपरांत जलाने पर उड़ी राख मेघों का सृजन करती है तो वहीं दफनाने से भूमि की उर्वरता को बढ़ाती है जो नये

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सृजन को सुनिश्चित करता है।

इस प्रकार हम देख सकते है कि कुछ ध्वस्त होता है तो वह नये का सृजन करता ही है। किंतु विध्वंस से नये सृजन के बिच का सम्बंध अत्यंत जटिल बना हुआ है। विध्वंस क्या हमेशा सृजन को जन्म देता है? निश्चित रूप से हर विध्वंस सृजन को जन्म देता है किंतु इसका स्वरूप क्या होगा यह प्रकृति - नीति के नियमों द्वारा निर्धारित होते है।

अतः सम्पूर्ण चर्चा के सार के रूप में हम कह सकते है कि विध्वंस और उससे नये का सृजन

एक सास्वत और सार्वभौमिक प्रक्रिया है। समय, स्थान, भौगोलिक परिस्थितियां तथा कई अन्य घटक मिलकर इसको सुनिश्चित करते रहते हैं। वर्तमान 21वीं सदी की मानव सभ्यता की समृद्धि के पीछे सम्पूर्ण मानव सभ्यता के अनुभव का जुड़ा हुआ है और हम भी इसी प्रक्रिया में एक निमित्त मात्र हैं। आवश्यकता यही है कि हम पर्यावरण विध्वंस को रोके, समावेशी विकास सुनिश्चित करे और लोकतंत्र को व्यवहारिक रूप में लागू कर सके ताकि नया सृजन अधिक समावेशी हो जिसका लाभ सम्पूर्ण चराचर उठा सके और हमारे जीवन को हम सार्थक कर सके।

Do
any
r
(इ
कृप

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

(5)

SECTION B

"एक व्यक्ति भयंकर आग में झपकी तो ले सकता है, लेकिन अत्यंत गरीबी में पलक भी नहीं झपका सकता।"

"श्वानों को मिलता है वस्त्र, दूध और भात
भूखे बच्चे अकुलाते हैं।
माँ की हड्डियों से लिपट-लिपट
जाड़ों की रात बिताते हैं।"

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की उपरोक्त पंक्तियां गरीबी और उस गरीबी की भयावकता को प्रस्तुत कर रही है जिसमें भयंकर आग की पीड़ा से भी अधिक

Don't write anything in the margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

परीक्षा विद्यमान होती है।

'गरीबी' अपने आप में एक व्यापक शब्द है जिसकी अलग अलग व्याख्याएं की जाती है। निरपेक्ष गरीबी वह गरीबी है जिसमें व्यक्ति जीवन के लिए जरूरी मूलभूत भौतिक जरूरतों की पूर्ति में भी असमर्थ होता है। रोटी कपड़ा, मकान, स्वच्छता, पानी स्वास्थ्य ऐसी ही मूलभूत जरूरतें हैं।

वहीं सापेक्ष गरीबी समाज में औसत समृद्धि की तुलना में पिछड़ा होना गरीबी कहलाता है जैसे अमेरिकी समाज में किसी व्यक्ति के पास 'कार' नहीं है तो वह गरीब है। वहीं भारत में गरीब वह है जो 2400 कैलोरी (ग्रामीण), 2100 कैलोरी (शहर) में उपभोग नहीं कर पाता।

Don't write anything in this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

डॉ. वाई. के. अलघ समिति (1979), लकड़ावाला समिति (1993), सुरेश तेंदुलकर समितियों, अरविंद पनगड़िया टास्क फोर्स ने गरीबी निर्धारण का प्रयास किया है। जिसमें अब व्यय के प्रतिमान के आधार पर गरीबी रेखा निर्धारित करने पर सहमती बनी है।

गरीबी के कारण अत्यन्त व्यापक प्रभाव पड़ते है। एक गरीब व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन से शुरू करें तो गरीब व्यक्ति अपने और अपने परिवार की मूलभूत जरूरतों की पूर्ति भी नहीं कर पाता। रोटी, कपड़ा, मकान को सुनिश्चित नहीं करने के कारण गुणवत्तापूर्ण जीवन जीना कठिन होता है।

इसके अतिरिक्त अभावों के कारण व्यक्ति मानसिक तनावों का सामना करना पड़ता है। राष्ट्रीय अपराधिक रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार 15-25 वर्ष के युवाओं की मृत्यु का प्रमुख कारण बेरोजगारी का होना है। किसानों की आत्महत्या, गरीब मजदूरों की आत्महत्या कर्ज को नहीं चुकाने का परिणाम होती है।

मानसिक तनाव अनिद्रा और समाज में हिंसा को बढ़ावा देता है। व्यक्ति अपने परिवार में हिंसा करता है। शोषण भी गरीबी का परिणाम होता है। साहूकारों से ऋण लेने उपरांत उनके द्वारा खेत-खलिहानों को हथिया लिया जाता है तथा सस्ती कीमतों पर

अनाज की खरीद और बेगारी कराई जाती है।

शोषण का यह रूप भारत के पिछड़े क्षेत्रों में लड़कियों को बेचने तथा वेश्या बनने को मजबूर होने जैसे अपमानों के रूप में सामने आता है। अंग तस्करी, मानव तस्करी, नशा तस्करी इसी गरीबी के परिणाम है।

गरीब व्यक्ति को प्रायः समाज में वह आदर नहीं दिया जाता जो गरिमापूर्ण जीवन की अनिवार्य शर्त मानी जाती है। जाति से बाहर करना, मुँह काला करना, बार-बार अपमानित करना इसी का परिणाम है।

साथ ही व्यक्ति की गरीबी एक गरीबी चक्र की भाँति पीढ़ी-दर-पीढ़ी

चलती है। गरीब व्यक्ति की कम आय उसके बच्चों को कुपोषित रखती है जिससे उनका मानसिक विकास नहीं हो पाता। जिसका परिणाम शिक्षा कौशल ग्रहण करने में पिछड़ापन के रूप में सामने आता है। जल्द विवाह जल्दी बच्चे होना गरीबी को बढ़ाते है।

गरीबी के कारण न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि सामाजिक स्तर पर भी आशा की तुलना में अधिक कष्ट उत्पन्न होता है।

ऑक्सफेम की रिपोर्ट अनुसार गरीबी संसाधनों का असमान वितरण को जन्म देती है जिससे भारत में 1% अमीरों के पास 42.3% संसाधन है

गये है वहीं गरीब 50% जनसंख्या के पास मात्र 5.3% ही संसाधन है।

गरीबी के कारण आपदाओं का सर्वाधिक प्रभाव गरीब पर ही पड़ता है। कोविड-19 महामारी में प्रवासी, असंगठित उद्योग श्रमिक ही सबसे ज्यादा पीड़ित रहे।

संयुक्त राष्ट्र संघ की "वैश्विक सामाजिक स्थिति पर रिपोर्ट 2015" के अनुसार गरीबी के कारण उत्पन्न असन्तोष समाज में हिंसा, साम्प्रदायिक दंगों और अपराध की आवृत्ति को बढ़ाते है। जैसे सोमालिया, जिम्बांवे, सुडान में देखा जा सकता है।

समाज में गरीब की आरक्षण

VISION IAS™

की माँग को लेके, जाति, धर्म क्षेत्रवाद, भाषा के आधार पर संगठित होता है और अपने असंतोष की अभिव्यक्ति सार्वजनिक व्यवस्था को नष्ट करके करता है। जैसे दिल्ली दंगे, उत्तर पूर्व भारतीयों के प्रति दक्षिण भारत में असंतोष।

गरीबी के कारण राजनीतिक व्यवस्था कभी पलक नही सपका पाती है। गरीब समाज में वोट बैंक की राजनीति आसान हो जाती है। उपहार, शराब, गिफ्ट, तथा अन्य प्रलोभनों के आधार पर वोट लेकर राजनीतिक दल लोकतंत्र को मज़ाक बनाकर रख देते है। इसी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कारण सुप्रीम कोर्ट ने 'नोट के बदले वोट' पर रोक लगाई। राजनीति का अपराधिकरण, कालेधन का प्रयोग, भ्रष्ट राजनीति गरीबी के प्रत्यक्ष परिणाम होते है। जैसे आयाराम-गयाराम (दल-बदल) की राजनीति इसी से सम्बंधित है।

अगर गरीबी को आर्थिक दृष्टि से देखे तो निर्भर जनसंख्या की वृद्धि, बेरोजगारी, पिछड़ी अर्थव्यवस्था और माँग में कमी गरीबी का परिणाम है। जिसके अतिरिक्त निवेश कम आता है अवसंरचना विकास पिछड़ता है। और उत्पादन भी सीमित रहता है। गिनी सूचकांक, लोरेंज वक्र में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

पिछड़ापन तथा बहुआयामी निर्धनता को बढ़ावा मिलने से देश की अर्थव्यवस्था नष्ट पिछड़ जाती है।

1947 के समय भारत एक अविकसित अर्थव्यवस्था था किंतु अब हमने गरीबी पर पर्याप्त नियंत्रण कर वृद्धि की दिशा में कदम उठाए है।

एक पिछड़ी अर्थव्यवस्था अपने अंतर्राष्ट्रीय दायित्वों को भी नहीं निभा पाती है। 1965 में PL-480 गेहूँ के आयात पर अमेरिका द्वारा शर्तें लगाना भारत की अंतर्राष्ट्रीय सम्प्रभुता पर हमले के समान था। एक "भरी हुई जेबों वाले सम्पन्न देश की बात प्रायः सभी देश सुनते है।"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

गरीबी का प्रभाव विज्ञान प्रौद्योगिकी के क्षेत्र पर भी पड़ता है। भारत अपने GDP का मात्र 0.67% (बजट 2021) ही रिसर्च पर खर्च करता है जिससे तकनीक के मामलों में हमें अन्य देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। जिससे औद्योगिक, कृषि, सूचना प्रौद्योगिकी में पिछड़ापन उत्पन्न होता है।

अतः उपरोक्त चर्चा उपरांत हम कह सकते हैं कि ~~अमीरी~~ एक व्यक्ति भयंकर आग में तो भले ही झपकी ले सकता है किंतु गरीबी में ~~आंख~~ पलक झपकाना संभव नहीं है क्योंकि गरीबी व्यक्ति के जीवन के सभी पक्षों को तो नकारात्मक रूप से

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रभावित करती ही है साथ में वह समाज, राजनीति, अनुव्यवस्था, अर्थव्यवस्था, विज्ञान प्रौद्योगिकी और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों को भी प्रभावित करती है।

इसलिए हमें गरीबी के हर रूप को, हर जगह से समाप्त करना होगा।